IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरिद्वर जनपद के ईट भट्टा उद्योगो में अकुशल महिला श्रमिकों की आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण

कल्पना वर्मा

शोधार्थीनी

अर्थशास्त्र विभाग बी. एस. एम. पीजी कॉलेज रूडकी हरिद्वर उत्तराखण्ड

kalpna4411@gmail.com

डा0 सुरजीत सिहं

सहायक प्राध्यापक

अर्थशास्त्र विभाग बी. एस. एम. पीजी कॉलेज रूडकी हरिद्वर उत्तराखण्ड

सारांश

भारत एक विकासशील राष्ट्र है जिसमें विभिन्न प्रकार के उद्योग संचालित हैं। इन उद्योगों में से ईंट भट्टा उद्योग महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह उद्योग सिंधुघाटी सभ्यता के समय से माना जाता है। आज विश्व के अधिकतम राष्ट्र ईंट भट्टा उद्योगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर हम भारत की बात करें तो भारत के विभिन्न राज्यों में ईंट भट्टा उद्योग संचालित हैं। उत्तराखण्ड के जनपद हरिद्वार के लगभग सभी विकासखण्डों में ईंट भट्टा उद्योग संचालित हैं। किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था उद्योगों पर निर्भर करती है। ये उद्योग मजदूरों पर निर्भर होते हैं। उद्योग कैसा भी हो, मजदूरों के अभाव में अपनी उत्पादकता में वृद्वि नहीं कर सकता । इस तरह मजदूर उत्पादन कार्य में एक सक्रिय कडी के रूप भूमिका अदा करते हैं। लेकिन इन उद्योगों में कार्यरत मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति बहुत ही खराब होती है। मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति को सुधारने के लिए अनेक कानूनों का भी निर्माण किया गया लेकिन सही तरह से क्रियान्वित न होने के कारण सब बेकार रहा। हमारे सामाजिक आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान अत्यंन्त महत्वपूर्ण है दैनिक कार्यों से लेकर राजनीतिक आर्थिक क्षेत्र के निर्णयों में अपना योगदान दे रही हैं। हम सब अपने अनुभव से ही यह कह सकते है कि महिलाओं के योगदान सहयोग के बगैर घर से लेकर कार्यालय तक का कार्य असंभव है। आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित न होने के कारण यह निष्कर्ष निकाला जाना कदाचित उचित नहीं होगा कि हमारे देश तथा राज्यों के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों से कम है।

मूल शब्द – विकासशील राष्ट्र, उद्योग, मजदूर, सिधुघाटी सभ्यता, प्रतिनिधित्व, निर्भरता, आर्थिक प्रस्थिति, सशक्तिकरण

प्रस्तावना

ईट का प्रयोग भवन निर्माण मे प्रचीनकाल सक होता आ रहा है जिसके प्रमाण सिन्धू घाटी सभ्यता मे भी मिलते है भारत की जनसंख्या में वर्षगत बढोतरी हो रही जिसके कारण उनको रहने के लिए आवास कि आवश्यकता पडती जा रही है जिसके कारण ईट भट्टा उधोगो की मांग भी बढती जा रही है। ईट भट्टा उधोग सम्पूर्ण विश्व मे संचालित उधोगो मे से प्राचीतम उधोग के रूप माना जाता हैं। इस उधोग का सम्बन्ध प्रचीन सभ्यताओ से भी रहा हैं। सिन्धू घाटी सभ्यता की खुदाई के दौरान ईटों के प्रमाण मिलें हैं। इस रूप मे यह उधोग प्रचीनतम उधोग मे से हैं। किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था उधोगो पर निर्भर करती हैं ये उधोग मजदूरो पर निर्भर होते हैं। उधोग कैसे भी लघु या कुटीर जो भी हो मजदूरो के अभाव मे अपनी उत्पादकता मे वृद्वि नही कर सकता हैं। इस रूप मे मजदूरो को उत्पादन सक्रिय कड़ी के रूप मे भूमिका अदा करते हैं एक राष्ट्र मे विभिन्न प्रकार के प्रकृतिक संसाधान बेकार हो जायेगा यदि उनका समुचित एवं व्यवस्थित ढ़ग से उपयोग मजदूरो के अभाव मे असम्भव सा प्रतीत होगा। संगठित मजदूरो मे हम उन मजदूरो को सम्मिलित करते हैं जो एक स्थान विशेष मे स्थित उधोगो मे कार्यरत है तथा जिनका अपना एक संगठनात्मक ढाचा होता हैं मजदूरो को मजदूरी का समय तथा सुविधाओ के निर्धारण मजदूर स्वयं न करके संगठनात्मक ढाचे द्वारा किया जाता हैं। असंगठित मजदूर वह मजदूर हैं जो अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति हेतू अथवा मजदूरी के लिए बिखरे होते हैं। इनकी मजदूरी, कार्य के घन्टें एव सुविधाओ का निर्धारण स्वयं मजदूरो द्वारा ही किया जाता हैं।

हमारे सामाजिक आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान अत्यंन्त महत्वपूर्ण है दैनिक कार्यों से लेकर राजनीतिक आर्थिक क्षेत्र के निर्णयों में अपना योगदान दे रही हैं। हम सब अपने अनुभव से ही यह कह सकते है कि महिलाओं के योगदान सहयोग के बगैर घर से लेकर कार्यालय तक का कार्य असंभव है। आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित न होने के कारण यह निष्कर्ष निकाला जाना कद्‌ाचित उचित नहीं होगा कि हमारे देश तथा राज्यों के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों से कम है।

हमारे समाज के प्रत्येक परिवार में घर का सारा कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। जो देश तथा राज्यों में सकल घरेलू उत्पाद /सकल राज्य घरेलू उत्पाद के आकंलन में परिलक्षित नहीं होता है। यहाँ तक कि जो महिलाएं प्रत्यक्ष आय अर्जित कर रही है वह भी अपने कार्य के साथ घर का कार्य भी करती है। इससे स्पष्ट है कि हमारे देश तथा राज्य के विकास में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों से अधिक है।

किसी भी क्षेत्र में कार्यगत श्रमिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे कम मजदूरी, कार्य के घण्टे की अनिश्चितता, आवास एंव स्वास्थ्य सुविधाएं, बीमारी, शिक्षा सम्बधि स्थिति आदि।

भारत में महिला श्रमिकों की भूमिका

भारत के श्रमबल में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में महिला कामगारों की कुल संख्या 149.9 मिलियन है तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला कामगार क्रमशः 121.9 और 28.0 मिलियन है (स्त्रोतः 2011 की जनगणना)। कुल 149.9 महिला कामगारों में से 35.9 मिलियन महिलाएँ खेतीहर मजदूर के रूप में कार्यरत है तथा 61.5 मिलियन कृषक श्रमिक है। शेष महिला कामगारों में से 8.5 मिलियन घरेलू उद्योग में है तथा 43.7 मिलियन अन्य कामगारों के रूप में वर्गीकृत हैं।

भारत महिलाओं की कार्यक्षेत्र सहभागिता दर 20011–12 में 31.2 प्रतिशत थी और जो 2017–18 में घटकर 23.3 प्रतिशत हो गई है। यह गिरावट ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत तेजी से दर्जा की गई 2017–18 मे महिलाओं की भागीदारी मे 11 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है कामगार जनसंख्या दर (डब्ल्यू.पी.आर.) 4वां वार्षिक रोजगार–बेरोजगार सर्वेक्षण (2013–14) के आधार

पर 35.1 प्रतिशत है जबकि (2013–14) शहरी क्षेत्रों में 17.5 प्रतिशत है और यू.पी.एस.एस. के अन्तर्गत 5वां वार्षिक रोजगार–बेरोजगार सर्वेक्षण (2015–16) के आधार पर शहरी क्षेत्रों में 14.8 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में 30.2 प्रतिशत है। श्रम ब्यूरों द्वारा दिसम्बर 2013 और अप्रैल 2015 को संचालित 4वां और 5वां वार्षिक रोजगार–बेरोजगार सर्वेक्षण के अनुसार यू.पी. एस.एस. एप्रोच के अन्तर्गत महिला श्रम बल सहभागिता दर 31.1 प्रतिशत से घटकर 27.4 प्रतिशत रह गई है।

उत्तराखण्ड में महिला श्रमिकों की भूमिका

2011 में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर 25.5 प्रतिशत थी जिसमें ग्रामीण भारत की महिलाओं की कार्यबल भागीदारी 30 प्रतिशत और शहरी भारत में 15.4 प्रतिशत थी इसके विपरीत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पुरूषों के लिए कार्यबल भागीदारी दर क्रमशः 53 प्रतिशत और 53.8 प्रतिशत थी। भारतीय अर्थव्यवस्था को अनौपचारिक या असंगठित श्रमिक रोजगार के विशाल बहुमत के अस्तित्व से चिन्हित किया जाता है। महिलाएँ भारतीय कार्यबल का एक अभिन्न अंग बनाती हे। राजिस्ट्रार जर्नरल ऑफ इण्डिया द्वारा प्रदान की गई सूचना के अनुसार महिलाओं की श्रम भागीदारी दर 2001 में 25.63 प्रतिशत थी यह 1991 में 22.27 प्रतिशत और 1981 में 19.67 प्रतिशत की तुलना में वृद्धि है। जहाँ महिला श्रम भागीदारी दर वृद्धि रही है वही यह पुरूष श्रम भागीदारी दर की तुलना में लगातार उल्लेखनीय रूप से कम होती जा रही है। 2001 में ग्रामीण क्षेत्रों में महिला श्रम भागीदारी दर 30.79 प्रतिशत थी वही शहरी क्षेत्रों में 11.88 प्रतिशत थी। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ मुख्य रूप से कृषि कार्यों में शामिल होती है। शहरी क्षेत्रों में लगभग 80 प्रतिशत महिला श्रमिक असंगठित क्षेत्रों में काम करती हैं जैसे घरेलू उद्योग छोटे व्यापार और सेवाए तथा भवन निर्माण। 2004–2005 के दौरान देश में कुल श्रमशक्ति का अनुमान 455.7 मिलियन लगाया गया है। जो विभिन्न राज्यों के लिए एम्पलोमेन्ट/अनएम्लोमेन्ट और जनसंख्या फेलाव पर 61वाँ राउंड सर्वे पर आधारित है। महिला श्रमिको की संख्या 146.89 मिलियन थी यह कुल श्रमिकों का 32.2 प्रतिशत थी इन महिला श्रमिको में लगभग 106.89 मिलियन या 72.8 प्रतिशत कृषि कार्य करती थी। यहाँ तक की पुरूष श्रमिको में उद्योग की भागीदारी केवल 48.8 प्रतिशत थी। ग्रामीण श्रम शक्ति में उद्योग की कुल भागीदारी लगभग 56.6 प्रतिशत थी। उत्तराखण्ड पर्वतीय राज्य होने के कारण यहाँ पर महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ऐंतिहासिक रूप से उत्तराखण्ड तथा अन्य हिमालयी राज्यों में महिलाओं का आर्थिक विकास में योगदान पुरूषों के मुकाबले तथा देश के अन्य मैदानी राज्यों के सापेक्ष ज्यादा रहा है राज्य के विकास में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों से अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड की जनसंख्या 100.86 लाख है। जिसमे 51. 38 लाख पुरूष 49.48 लाख महिलाएँ हैं।

कार्य सहभागिता

राज्य में श्रमबल में भागीदारी की दर 45.9 प्रतिशत (राष्ट्रीय औसत 50.3 प्रतिशत) आंकलित हुई है अर्थात् राज्य 15 वर्ष एवं अधिक आयु के 45.9 प्रतिशत या तो कार्य कर रहे थे या कार्य की तलाश में थे। ग्रामीण क्षेत्र में यह दर 47.8 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 40.5 प्रतिशत रही है। जबकि महिलाओं की दर 70.5 से अत्यधिक कम 19.5 आकलित हुई है वही शहरी महिलाओं की श्रमबल में भागीदारी दर 11.5 प्रतिशत तथा ग्रामीण महिलाओं की 22.0 प्रतिशत है। राज्य में कार्यशील जनसंख्या अनुपात (UPS Approach के आधार पर) 42.7 प्रतिशत (राष्ट्रीय औसत 47.8 प्रतिशत) आकलित हुआ है अर्थात सन्दर्भित अवधि में राज्य के 15 वर्ष एवं अधिक आयु के 42.7 प्रतिशत व्यक्ति विभिन्न प्रकार के रोजगार में लगे हुए थे। ग्रामीण क्षेत्र में यह दर 43.9 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 39.2 प्रतिशत रही। जबकि महिलाओं की दर पुरूषों की दर 66.3 प्रतिशत से अत्यधिक कम 17.3 आकलित हुई है। वहीं शहरी महिलओं की कार्यशील जनसंख्या दर 10.4 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं की कार्यशील जनसंख्या दर 19.5 प्रतिशत है।

अनियमित महिला श्रमिक

ऐसी महिला श्रमिक जिन्हें कोई व्यक्ति या उद्यमी नियमित रूप से काम पर नहीं रखता सिर्फ उसे मासिक मजदूरी पर ही रखता है, अनियमित महिला श्रमिक कहलाती है। ऐसे श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के लाभ जैसे– भविष्य निधि, पेंशन आदि नहीं मिलती है। इनका नाम उद्यम के स्वामियों के स्थायी वेतन सूची में नहीं होता हैं।

भारत में ईट भट्टा उद्योग

भारत मे ईट भट्टा उद्योग महत्वपूर्ण रूप से ग्रामीण और अर्द्ध शहरी क्षेत्र में पाए जाते है। ये उद्योग मौसमी उद्योगो के अर्न्तगत आते हैं जो नवम्बर से जून तक ईट बनाने का काम करते है। ईट भट्टों में महिला श्रमिको की सामाजिक आर्थिक स्थिति से पता चलता है कि आमतौर पर वे समाज के गरीब वर्गो से आती है। ज्यादातर महिला श्रमिक निर्धारित जातियों या पिछडी जातियों से है। सभी ईट भट्टों में, सामान्य रूप से महिला श्रमिको को मारना–पीटना, सख्ती के साथ धमकी देना, दुर्व्यव्यवहार एवं शोषण एक आम घटना है। जिसके लिए सरकार द्वारा समय–समय पर अनेक कानून बनाये गये हैं जिसमें से महत्तवपूर्ण कानून एवं अधिनियम निम्नलिखित हैं:

ईट भट्टा उद्योग में अकुशल महिला श्रमिक

भारत में ईट बनाने का इतिहास लगभग 5000 वर्ष पुराना है। भारतीय सिन्धु सभ्यता के लोग बडे पैमाने पर ईट का इस्तेमाल करते थे। आज भी ईटे देश भर में बडे पैमाने पर इस्तेमाल की जा रही है। ईटों के उत्पादन में भारत विश्व का दूसरा सबसे बडा देश है(योजना आयोग 2006) जबकि पहला स्थान चीन का हैं। कुल उत्पादन का 14 प्रतिशत चीन द्वारा, 11 प्रतिशत भारत द्वारा, 10 प्रतिशत उतपादन होता है, लगभग 1000,000 ईट भट्टे है जिनमें लगभग 150–200 मिलियन ईटों का निर्माण होता हैं प्रतिवर्ष (j.s kamyotra) पाकिस्तान एवं 4 प्रतिशत बांगलादेश द्वारा उत्पादन किया जाता हैं। ईट निर्माण में लगी महिला श्रमिकों को अनेक सामाजिक, आर्थिक समस्याओ के साथ सघंर्षमय जीवन जीना पड रहा है। वर्तमान में इन श्रमिकों को विभिन्न प्रकार समस्याओ जैसे की मजदूरी, आवास, रहन–सहन, भोजन, स्वास्थ्य आदि कई समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है। अतः इनकी समस्याओ को सरकार तक पहुँचाने व उनकी वास्तविकता से परिचित होने की मानसिकता बनाने हेतु उनका अध्ययन आवश्यक है। वर्तमान युग में संसार का प्रत्येक प्राणी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक कई प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ रहता है। इसी श्रृंखला के साथ हमारे ईट बनाने में लगने वाला साधारण श्रमिक भी अपना सपंर्ण जीवन संघर्षमय जीता रहता है। आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीति के तहत श्रमिको की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। ईट निर्माण कार्य में लगें श्रमिकों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति, निर्धनता, कम मजदूरी, स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में जानने का प्रयास किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

मण्डल, अमल (2005) प्रस्तुत पुस्तक में ईंट–भट्टा उधोगो में काम करने वाली महिला मजदूरों की समस्याओं को उजागर किया गया है। इस अध्ययन में बताया गया है कि ईंट उधोगो का काम मौसमी है और रोजगार भी संविदात्मक है। यह काम पूरी तरह से असुरक्षित रोजगार है जिसमें मजदूरी भी एक साथ न मिलकर टुकड़ो मे मिलती है। मण्डल, अमल (2005) प्रस्तुत पुस्तक में ईंट–भट्टा उधोगो में काम करने वाली महिला मजदूरों की समस्याओं को उजागर किया गया है। इस अध्ययन में बताया गया है कि ईंट उधोगो का काम मौसमी है और रोजगार भी संविदात्मक है। यह काम पूरी तरह से असुरक्षित रोजगार है जिसमें मजदूरी भी एक साथ न मिलकर टुकड़ो मे मिलती है। अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिकतर ईंट–भट्टा उद्योगो मे महिला ही मजदूर के रूप मे कार्य करती है जो अक्सर निम्न जाति और अनपढ़ होती है। इस अध्ययन के माध्यम से यह भी

स्पष्ट हुआ है कि ईंट भट्टा उद्योगो मे महिला मजदूरो के बच्चो को रखने, काम के निश्चित घण्टों का अभाव, पीने के पानी की समस्या एवं प्रथम से महिला शौचालयो का अभाव आदि समस्याएं उजागर हुई है।

सिंह, दरमपाल (2003) प्रस्तुत अध्ययन मे ईंट–भट्टा उद्योगों में काम करने वाली महिला श्रमिकों का अध्ययन है। इस अध्ययन में ईंट–भट्टा उद्योगो मे काम करने वाली महिला मजदूरों की आवास, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा और कल्याणकारी सुविधाओं से सम्बन्धित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ईंट भट्टा मालिकों को ईंट–भट्टों पर काम करने वाली महिला मजदूरो को उचित स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याणकारी उपाय प्रदान करने का सुझाव दिया है।

उपाध्याय–चवन, वी.डी. (1991) ने अपने अध्ययन मे ईंट निर्माण उद्योग में आप्रवासी श्रमिकों का एक सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण में ईंट–भट्टों मे काम करने वाले आप्रवासी श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन किया है। इस अध्ययन मे यह पाया गया कि निम्न जीवन स्तर, गरीबी, कर्ज मे डूबे हुए, अशिक्षा और ईंट–भट्टा उद्योगो में श्रमिकों की बेरोजगारी के कारणो की व्यापक समीक्षा की गई है। लेकिन इस अध्ययन में यह सुझाव नहीं दिया गया कि ईंट–उद्योगों के मजदूरों की समस्याओं को कैसे दूर किया जाए।

उद्देश्यः–

1 ईट भट्टा उधोगों में अकुशल महिला श्रमिकों मजदूरों की आर्थिक समस्यों का अध्ययन करना ।

2 अकुशल महिला श्रमिकों की आर्थिक सशक्तिकरण में ईट भट्टा उधोगों कि भूमिका का अध्ययन करना ।

अध्ययन क्षेत्र का संक्षिप्त विवरण

यह अध्ययन जनपद हरिद्वार के विकासखण्ड नारसन एवं भगवानपुर के ईट भट्टा उद्योग में कार्यरत अकुशल महिला श्रमिकों से सम्बन्धित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन हरिद्वरा जनपद के ईट भट्टा उधोगो मे अकुशल महिला श्रमिकों की आर्थिक समस्याओं का **विश्लेषण** , प्रस्तुत अध्ययन एक विवरणात्मक प्रकृति का है। जनपद हरिद्वार जनपद कुल 151 है प्रस्तुत अध्ययन मे नारसन और भगवानपुर विकासखण्डो में से कुल 20 प्रतिशत ईट भट्टा उधोगो का चयन यादृच्छिक किया गया है इस प्रकार प्रत्येक नारसन से 11 ईट भट्टे एवं भगवानपूर से 9 ईट भट्टो का चयन हुआ । प्रत्येक विकासखण्ड से महिला श्रमिको का चयन न्यायदर्श विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक विकासखण्ड के ईट भट्टे से 13–13 महिला श्रमिको का चयन किया गया इस प्रकार कुल 312 महिला श्रमिको का चयन किया गया है । यह अध्ययन जनपद हरिद्वार के नारसन और भगवानपुर विकासखण्डों मे के ईट भट्टा उद्योग में कार्यरत महिला श्रमिकों से सम्बन्धित है। कुल उद्योगों में से 20 प्रतिशत उद्योगों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। क्योंकि अध्ययन की प्रकृति विवरणात्मक है इसलिए आँकडों के संकलन के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली इस प्रकार तैयार की गई। जिससे अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सकें एवं आवश्यकतानुसार अनौपचरिक समूह चर्चा भी करायी गयी है जिससे उचित जानकारी उत्तरदाता से प्राप्त हो सके।

उपकरण

आँकडों का विश्लेषण के लिए प्रतिशतता एवं सारणीयन विधि का उपयोग किया गया है

आँकडों का विश्लेषण

शोद्यार्थिनी द्वारा अध्ययन के लिए सर्वे मे एकत्रित आँकडों का विश्लेषण निम्न प्रकार किया गया है आँकडों के विश्लेषण के लिए प्रतिशतता एवं सारणीयन उपयोग किया गया है

आर्थिक स्थिति

तालिका क्रमांक– 1 उत्तरदाता के रोजगार और मजदूरी का सारणीयन

रोजगार		मजदूरी किस आधार पर मिलती है		कुल
		ईटो के निर्माण के आधर पर	न्यूनतम मजदूरी के आधार पर	
अनियमित	बारम्बारता	158	102	260
	प्रतिशतता %	60.8%	39.2%	100.0%
कुल	बारम्बारता	158	102	260
	प्रतिशतता %	60.8%	39.2%	100.0%

स्त्रोत : शोधार्थिनी द्वारा स्वयं संकलित प्राथमिक आँकड़े 2019–21

तालिका से स्पष्ट है उत्तरदाताओ की सर्वाधिक 60.8% (158) महिला श्रमिको को मजदूरी ईटो के निर्माण के आधार पर मजदूरी मिलती है जबकि 39.2% (102) महिला श्रमिको को मजदूरी न्यूनतम मजदूरी के आधार पर मिलती है।

तालिका क्रमांक–2 उत्तरदाता के रोजगार कि स्थिति और आय का सारणीयन

रोजगार की स्थिति		मसिक आय				कुल
		(3000-कम)	(3000 - 5000)	(5000-8000)	(8000-अधिक)	
अनियमित	बारम्बारता	11	122	111	16	260
	प्रतिशतता %	4.2%	46.9%	42.7%	6.2%	100.0%
कुल	बारम्बारता	11	122	111	16	260
	प्रतिशतता %	4.2%	46.9%	42.7%	6.2%	100.0%

स्त्रोत : शोधार्थिनी द्वारा स्वयं संकलित प्राथमिक आँकड़े 2019–21

तालिका मे दर्शाया गाया है कि महिला श्रमिको के रोजगार की स्थिति अनियमित है इस प्रकार सर्वाधिक मासिक आय 300–5000 प्रति माह 46.9% (122) उत्तरदाताओ ने बताया है इसी प्रकार सर्वेक्षण मे सबसे कम आय 300–से कम 4.2 (11) उत्तरदाताओ ने बताई है जबकि 800 –अधिक 6.2% (16) हैं ।

तालिका क्रमांक –3 उत्तरदाता के रोजगार कि स्थिति और मजदूरी नियमित मिलती है का सारणीयन

रोजगार		मजदूरी नियमित रूप मिलती है			कुल
		हमेशा	प्रायः	कभी नही	
अनियमित	बारम्बारता	147	44	69	260
	प्रतिशतता %	56.5%	16.9%	26.5%	100.0%
कुल	बारम्बारता	147	44	69	260
	प्रतिशतता %	56.5%	16.9%	26.5%	100.0%

स्त्रोत : शोधार्थिनी द्वारा स्वयं संकलित प्राथमिक आँकड़े 2019–21

तालिका मे दर्शाया गाया है कि महिला श्रमिको के रोजगार की स्थिति अनियमित है सर्वाधिक उत्तरदाता 56.5% (147) ने प्रतिभाग किया जिनको मजदूरी नियमित रूप से हमेशा मिलती है जबकि 26.5% (69) ने उत्तर दिया कि उनको मजदूरी नियमित रूप से कभी नही मिलती है इसी प्रकार 16.9% (44) महिला श्रमिको ने बताया कि उनको मजदूरी नियमित रूप से प्रायः हि मिलती है।

महिला श्रमिकों का आर्थिक सशक्तिकरण

महिलाओ के आर्थिक सशक्तिकरण का तात्पर्य उनकी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता एवं सशक्त क्षमता से है। यह तभी संभव होगा जब नारी अपना समय उत्पादक कार्य में दें चाहे प्राथमिक क्षेत्र,द्वितीयक क्षेत्र या तृतीयक क्षेत्र हो ,अपना उचित पारिश्रमिक हक ओर समानता से प्राप्त करे । महिलाओ के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उन्हें जमीन –जायदाद ,बैक –खाता ,बचत ,निवेश में निर्णय लेने ,सम्पत्ति पर समान अधिकार इत्यादि होना ही चाहिए

तालिका क्रमांक –4 उत्तरदाता के रोजगार कि स्थिति और अपनी आय का व्यय किस पर करती है का सारणीयन

रोजगार कि स्थिति		अपनी आय का व्यय किस पर करती				कुल
		बच्चों की शिक्षा पर	घरेलू खर्चो पर	स्वयं के स्वास्थ्य तथा सुरक्षा	घर के सदस्यों के पालन–पोषण	
अनियमित	बारम्बारता	78	116	18	48	260
	प्रतिशतता %	30.0%	44.6%	6.9%	18.5%	100.0%
कुल	बारम्बारता	78	116	18	48	260
	प्रतिशतता %	30.0%	44.6%	6.9%	18.5%	100.0%

स्त्रोत : शोधार्थिनी द्वारा स्वयं संकलित प्राथमिक आँकड़े 2019–21

तालिका से स्पष्ट होता है कि महिला श्रमिको की रोजगार कि स्थिति अनियमित है सर्वाधिक उत्तरदाता 44.6% (116) प्रतिभाग किया जिसमें बताया कि वे अपनी आय का सर्वाधिक व्यय घरेलू खर्चो पर करती है जबकि 30.0% (78) महिला श्रमिक अपनी आय का व्यय बच्चों की शिक्षा पर करती है तथा 18.5% (48) महिला श्रमिक घर के सदस्यों के पालन –पोषण मे व्यय करती है इसी प्रकार 6.9% (18) महिला श्रमिक अपनी आय का व्यय स्वयं के स्वास्थ्य तथा सुरक्षा पर खर्च करती है।

तालिका क्रमांक–5 उत्तरदाता के रोजगार कि स्थिति और बोनस अधिनियम 1965 के भुगतान का सारणीयन

रोजगार कि स्थिति		बोनस अधिनियम 1965 के भुगतान		कुल
		हाँ	नही	
अनियमित	बारम्बारता	5	255	260
	प्रतिशतता %	1.9%	98.1%	100.0%
कुल	बारम्बारता	5	255	260
	प्रतिशतता %	1.9%	98.1%	100.0%

स्त्रोत : शोधार्थिनी द्वारा स्वयं संकलित प्राथमिक आँकड़े 2019–21

तालिका से स्पष्ट होता है कि महिला श्रमिको की रोजगार कि स्थिति अनियमित है इस प्रकार सर्वाधिक उत्तरदाता 98.1% (255) ने बताया कि उन्हं बोनस अधिनियम 1965 के तहत भुगतान नही किया जाता है जबकि 1.9% (5) महिला श्रमिको ने बताया कि उन्हे बोनस अधिनियम 1965 के तहत भुगतान किया जाता है।

सुझाव व निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिला श्रमिकों की स्थिति दयनीय है ईट भट्टा उद्योगो मे कम करने वाली महिला श्रमिको का रोजगार अनियमित होता है। ईट भट्टा जून माह से लेकर नवम्बर माह तक होता है जिस कारण यहाँ पर काम अनियमित दौर पर ही मिलता है जिस कारण ईट भट्टा पर काम करने वाली महिला श्रमिको को अनियमित रोजगार मिलता है सर्वाधिक महिला श्रमिको को मजदूरी उनके काम के अनुसार हि मिलती है। ईट भट्टो पर काम कारने वाली सर्वाधिक ऐसी महिला श्रमिक है जिनको मजदूरी नियमित रूप से हमेशा मिलती है परन्तु कुछ महिला श्रमिक ऐसी भी है जिनको मजदूरी नियमित रूप से प्रयाः हि मिलती है। सर्वाधिक महिला श्रमिक ऐसी है जिनकी मासिक आय 3000–5000 है बोनस अधिनियम 1965 के भुगतान के तहत न होने के कारण महिला श्रमिको को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है सर्वाधिक महिला श्रमिक ऐसी है जिनको भुगतान बोनास अधिनियम 1965 के तहत नही मिल पाता है उन्हे मजदूरी , बोनस ,कटौती ,जुर्माना आदि की समस्या का सामना करना पड़ता है। महिला श्रमिको का आर्थिक सशक्तिकरण तो हो रहा है पर आज भी वे अपनी आय को स्वयं के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा पर व्यय नही कर पाती है वे अपनी आय का व्यय सर्वाधिक बच्चों की शिक्षा पर और घरेलू खर्चो पर व्यय करती है । इस प्रकरा कहा जा सकता है कि महिला श्रमिको की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नही है। अनियमित होने के कारण इन महिला श्रमिको की स्थिति दयनीय है अधिकतम महिलाओं को न्यूनतम मजदूरी भी नही मिल रही है महिला श्रमिको को न्यूनतम मजदूरी दी जानी चाहिए। महिला श्रमिकों को वार्षिक बोनस प्रदान किया जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 मण्डल, अमल :(2005) 'वॉमेन वर्कर्स इन ब्रिक फैक्ट्री' जनै बुक ऐजेन्सी, नई दिल्ली, ISBN .9788172111779

2 सिंह, दरम पाल : (2003) ''लिविंग कण्डिशन्स ऑफ वोमने इन ब्रिक किन इण्डस्ट्री ऑफ इण्डिया : रिफ्लेक्टिंग द ऐजेण्डा फोर सोशियल वक र्इण्टरवेन्सन'' नागासाकी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जापान

3 कटियार सुधीर : (2012) व्यूनेरेबिलिटी असेसमेटं ऑफ ब्रिक किन वकर्स इन फाइव डिस्ट्रिक्ट ऑफ वेस्ट उत्तर प्रदेश' इन्टरनशेनल लेबर ऑगर्नेाइजेशन, नई दिल्ली।

4 नण्डाल, सन्तोष एवं कुमार, प्रवीण : (2016) ''वॉमेन वकर्स इन इनफोर्मल इकॉनोमी : ए स्टेडी ऑफ ब्रिक किन इन हरियाणा'' Vol.15 ISSN. 2320 . 2939 पेज – 1–22